हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र,

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा हिंदी प्रचार समिति, बोलपुर में आयोजित त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

विषय - छायावादी काव्य में सांस्कृतिक और दार्शनिक चेतना : निराला के विशेष संदर्भ में

रिपोर्ट

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा द्वारा हिंदी प्रचार समिति, बोलपुर में त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 5,6 एवं 7 फरवरी, 2020 को "छायावादी काव्य की सांस्कृतिक और दार्शनिक चेतना : निराला के विशेष संदर्भ में" विषय पर किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन सत्र 5 फरवरी, 2020 पूर्वाह्न 11 बजे से मध्याह्न 1:30 बजे तक सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत विशिष्ट अतिथि सुनीति कुमार पाठक ने दीप प्रज्वलन कर किया। इसके बाद महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के कुलगीत के गायन से हुआ। साथ ही महाप्राण निराला के सरस्वती वंदना को भी मंगलाचरण के रूप में प्रस्तुत किया गया। इसी क्रम में वर्धा से आए विद्वान प्रो. अखिलेश कुमार दुबे जी ने स्वागत भाषण के रूप में अपने को सौभाग्यशाली बताते हुए वर्धा के कुलपति रजनीश शुक्ल जी को धन्यवाद दिया और संगोष्ठी को उनके परामर्श का प्रतिफल बताया।

आगे हिंदी प्रचार समिति, बोलपुर के सचिव प्रो. एम. एल. तापड़िया जी ने हिन्दी प्रचार समिति की स्थापना एवं विकास की चर्चा करते हुए हरिभाउ उपाध्याय के योगदान पर प्रकाश डाला। विषय प्रवर्तन जयपुर से पधारे वरिष्ठ प्रो. हेतु भारद्वाज जी ने बीज वक्तव्य देते हुए "छायावाद के औपनिवेशिक सत्ता से मुक्ति का साहित्यक आंदोलन बताया"। इसी क्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर वरिष्ठ विद्वान प्रो. सुनीति कुमार पाठक जी ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए साहित्यक चर्चा की। तत्पश्चात्य हिन्दी प्रचार समिति के सभापति प्रोफेसर हरिश्चंद्र मिश्र ने कहा की "छायावाद स्थूलता को अनुभूति तक ले जाने की प्रक्रिया है"। इसके अलावा बताया कि "स्वानुभूत वेदना ही छायावाद का आधार है"। पहले सत्र के अंत में डॉ. रेखा ओझा ने हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा तथा हिंदी प्रचार समिति, बोलपुर के सक्षम प्रधाकारियों के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए वर्धा के माननीय कुलपति रजनीश शुक्ल जी के प्रति आभार व्यक्त किया। इसके साथ ही मुख्य अतिथि सुनिती कुमार पाठक,प्रो. हेतु भारद्वाज, डॉ. अखिलेश दूबे, प्रो. हरिश्चंद्र मिश्र,को धन्यवाद दिया। इस उद्घाटन सत्र का सफल संचालन डॉ. जगदीश भगत ने किया।

आगे अपराह्न 2:30 बजे से अपराह्न 5 बजे तक प्रथम अकादमिक सत्र "सामाजिक चेतना और निराला का काव्य" विषय पर सम्पन्न हुआ। सत्र की अध्यक्षता प्रो. मंजु रानी सिंह, हिंदी भवन, विश्वभारती ने की। मुख्य वक्ता के रूप में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्रो. वशिष्ठ अनूप, वक्ता के रूप में रुद्रपुर से शैलेय शम्भूनाथ पांडेय, कलकत्ता विश्वविद्यालय से डॉ. रामप्रवेश रजक, विश्वभारती से डॉ. अर्जुन कुमार, यहीं से प्रो. सिराजुल इस्लाम, एवं म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा से डॉ. संजय तिवारी की उपस्थिती रही। सत्र का प्रारम्भ कलकत्ता वि.वि. से आए डॉ. रामप्रवेश रजक ने बनारसी दास चतुर्वेदी तथा निराला के संदर्भ में अपनी महत्वपूर्ण बातों से की। जिसमें उन्होंने

बताया कि किस प्रकार छायावाद के शुरुवाती दौर में निराला के विरुद्ध विरोधी अभियान बनारसी दास चतुर्वेदी ने चलाया था। इस सत्र के दूसरे वक्ता के रूप में प्रो. सिराजुल इस्लाम ने कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि "छायावाद के पहले के साहित्य में भक्ति और शृंगार की प्रधानता थी। छायावादी कवियों ने और विशेष कर निराल ने उसे जीवन और समाज से जोड़ा"। इस सत्र के तीसरे वक्ता डॉ. संजय कुमार तिवारी ने निराला के काव्य में दर्शन को लेकर महत्वपूर्ण बातें कहीं। उन्होंने कहा कि " दर्शन को ज्ञान का विज्ञान कहा जाता है , इसमें समग्र जीवन से संबन्धित चिंतन होता है। उन्होंने बताया कि निराला का जो हिमालयी और चट्टानी व्यक्तित्व है। उसके निर्माण में विभिन्न दर्शनों का प्रभाव है। खास कर वेदान्त दर्शन का ज्यादा प्रभाव है"। उन्होंने तुलसी और निराला की तुलना की। उन्होंने बतलाया कि जिस तरह तुलसी का काव्य मध्यकाल के दो संस्कृतियों के बीच निर्मित हुई है उसी प्रकार निराला का काव्य पाश्चात्य और भारतीय संस्कृति के बीच निर्मित हुई है। उन्होंने इस बात का विशेष रूप से कहा कि "निराला के काव्य का मूल्यांकन मार्क्सवाद के आग्रह से नहीं किया जा सकता"। उन्होंने बताया कि वस्तुतः सांस्कृतिक उपनिवेशवाद के खिलाफ आत्म शक्ति के जागरण का काव्यात्मतक प्रतिफलन ही निराला का छायावाद है। जिसके मूल में वेदान्त की दार्शनिक चेतना कार्यरत है और वही निराला की दर्शनिकता है। तत्पश्चात चौथे वक्ता के रूप में अर्जुन कुमार ने छायावाद की परिभाषा " स्थूल के प्रति सूक्षम का विद्रोह" की विशेष रूप से चर्चा की। उन्होंने आचर्य रामचन्द्र शुक्ल के छायावादी आलोचना संबंधी विचारों का उल्लेख किया। इसी क्रम में अगले वक्ता प्रो. शैलेय शम्भु नाथ पांडे ने निराला के काव्य पर विशेष रूप से चर्चा

की। उन्होंने बतलाया कि निराला पर बात केवल छायावाद की सीमा के भीतर नहीं की जा सकती। उन्होंने यह भी कहा कि "निराला का काव्य औपनिवेशिक मानसिकता से मुठभेर करती है"। उनके यहाँ सांस्कृतिक बोध अपनी प्रखरता में अभिव्यक्त होती है। उन्होंने इस संदर्भ में विभिन्न कविताओं का उल्लेख किया। इस सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. वशिष्ठ अनूप ने कहा- "अगर निराला हमे न मिला होता तो हम दरिद्र होते। भाव और प्रयोग दोनों स्तर पर"। उन्होंने इस बात पर विशेष जोर दिया कि "मुक्त छंद के प्रवर्तक निराला न होकर महावीर प्रसाद द्विवेदी है। क्योंकि कविता गद्य में भी हो सकती है यह बात को द्विवेदी जी ने पहले कहा था"। उन्होंने नवगीत विधा के प्रवर्तक के रूप मे भी निराला का उल्लेख किया। इस सत्र की अध्यक्ष प्रो. मंजु रानी सिंह ने सभी वक्ताओं के महत्वपूर्ण बातों की समीक्षा की। उन्होंने इस सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. वशिष्ठ अनूप के विचाओं को विशेष रूप से उल्लेख किया कि "निराला न होते तो हम बहुत दरिद्र होते"। इस सत्र का सफल संचालन श्री भास्कर मिश्र ने किया। इसी चर्चा के साथ प्रथम अकादमिक सत्र कि समाप्ती हुई।

प्रथम दिवस की आखरी कड़ी के रूप में सांस्कृतिक संध्या पर निराला द्वारा रचित उपन्यास 'बिल्लेसुर बकरिहा' का नाट्य मंचन किया गया। नाटक का निर्देशन दीपक कुमार ने किया एवं संगीत रतन ओझा द्वारा संचालित किया गया। इसके आलवे कबीरा, बाउल आदि की भी प्रस्तुतियां हुई। इसी के साथ प्रथम दिवस के कार्यक्रम कि समाप्ती हुई।

संगोष्ठी के दूसरे दिन का आरंभ पूर्वाह्न 10 बजे से हुआ। इस दिन का प्रथम सत्र अर्थात द्वितीय अकादमिक सत्र का विषय "छायावादी काव्य में प्रेम का स्वरूप और नारी चेतना" था। इस सत्र कि अध्यक्षता प्रो. अखिलेश कुमार दूबे ने की। विशेष वक्ता के रूप में कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड़ कॉमर्स, कंकडबाग से प्रो. प्रमोद कुमार जी ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। वक्ता के रूप में टी.डी.वी. कॉलेज, रानीगंज से डॉ. गणेश रजक, विश्वभारती के संगीत भवन से डॉ. अमित वर्मा, हिंदी भवन से डॉ. जगदीश भगत, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा से प्रो. अशोक त्रिपाठी की उपस्थिती रही। सत्र का प्रारम्भ डॉ. गणेश रजक ने निराला के उपन्यासों में यथार्थ बोध के संदर्भ में निराला के क्रांतिकारी विचारों पर चर्चा की। उन्होंने निराला के उपन्यास बिल्लेसुर बकरिहा में सामाजिक यथार्थ पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में अगले वक्ता के रूप में डॉ. जदगीश भगत ने अपने आलेख में "निराला के आलोचक व्यक्तित्व" पर चर्चा की। उन्होंने कहा की हिंदी जगत में अगर रवींद्रनाथ टैगोर की चर्चा की जाती है तो उसका श्रेय निराला को जाता है। इसी क्रम में डॉ. अमित वर्मा ने छायावाद में संगीत के संदर्भ में अपनी बात रखी। उन्होने छायावादी काव्य काला कौशल का चित्रण करते हुए नाद तत्व और संगीतज्ञता का सारगर्भित वर्णन किया। अगले वक्ता के रूप में डॉ. प्रमोद कुमार ने छायावाद और रहस्यवाद को जोड़ कर निराला की साहित्यक संवेदना पर चर्चा की। इस सत्र के मुख्य वक्ता डॉ. अशोक कुमार त्रिपाठी ने अपने वक्तव्य में रामचंद्र शुक्ल के इतिहास लेखन में निराला की रचना धर्मिता और निराला की रचना सृष्टि पर चर्चा के साथ ही साथ छायावादी कवियों की दार्शनिकता पर बात की। इस सत्र के अध्यक्षीय वक्ता के रूप में प्रो. अखिलेश कुमार दूबे ने उपरोक्त वक्ताओं के वक्तव्य की सारगर्भित व्याख्या करते हुए छायावाद की प्रासंगिकता पर चर्चा की। इस सत्र का सफल संचालन डॉ. अभिषेक मिश्र ने किया। इसी चर्चा के साथ दूसरे अकादमिक सत्र कि समाप्ती हुई।

अगले सत्र के रूप में इस कार्यक्रम के तृतीय अकादमिक सत्र का आरंभ 12 बजे से हुआ। कार्यक्रम का विषय "निराला की रचनात्मक स्वानुभूति" था। इस सत्र की अध्यक्षता हिंदी भवन विश्वभारती से आए प्रो. रामेश्वर मिश्र ने की। मुख्य वक्ता के रूप में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर वशिष्ठ अनूप थे। वक्ता के रूप में टी.डी.वी. कॉलेज, रानीगंज से डॉ. महेंद्र कुमार कुशवाहा, हिंदी भवन विश्वभारती से डॉ. श्रुति कुमुद, जयपुर से प्रो. हेतु भारद्वाज उपस्थित थे। इस सत्र में हेतु भारद्वाज ने साहित्य में दर्शन की बात कही। उन्होंने दर्शन के संदर्भ में आत्मा और परमात्मा के मिलन की चर्चा की। इसके अतिरिक्त छायावाद की दर्शनिक पक्षधरता का चित्रण करते हुए साहित्य मे उसके अध्ययन पर बल दिया। अगले वक्ता के रूप में डॉ. महेंद्र कुमार कुशवाहा ने साहित्य में छायावाद के योगदान पर चर्चा की। उन्होंने छायावाद को विभिन्न रूप में पारिभाषित किया। 1857 के स्वतंत्रता संग्राम का हवाला देते हुए छायावादी कवियों की काव्य धर्मिता को प्रस्तुत किया। कुशवाहा जी ने बताया कि "छायावादी कवियों ने जागरण गीत लिख कर भारतीयों को जगाने का प्रयास किया। 'बादल राग, विप्लव, जागो फिर एक बार' जैसी कविताओं कि चर्चा करते हुए उन्होंने अपने वक्तव्य कि समाप्ती की। अगले वक्ता के रूप में डॉ. श्रुति कुमुद ने छायावादी भाषीय शिल्प पर बात करते हुए छायावादी कवियों कि रचना धर्मिता का मूल्यांकन किया। डॉ. कुमुद ने छायावादी जागरण के तत्वों एवं प्रवृत्तियों का चित्रण करते हुए छायावादी काव्य पृष्ठभूमि पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि "छायावाद परोक्ष जीवन कि शैली न होकर प्रत्यक्ष है"। अंततः उन्होंने छायावाद पर लागने वाले आरोपों का चित्रण करते हुए छायावाद कि नए कलेवर से व्याख्या की। तत्पश्चात्य मुख्य वक्ता प्रो. वशिष्ठ अनूप ने छायावादी प्रेम पर प्रकाश डाला। उन्होंने छायावाद कि समय-सीमा का निर्धारण करते हुए छायावादी कवियों के काव्य में व्याप्त संघर्ष का चित्रण किया तथा छायावाद के कवियों के काव्य प्रेम का अवलोकन किया। उन्होंने छायावाद में पंत कि काव्य-कला में प्रेम का चित्रण करते हुए पंत कि गहन संवेदना को व्यक्त किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. रामेश्वर मिश्र ने विद्वानों के द्वारा कहे गए वक्तव्यों की सारगर्भित समीक्षा की। उन्होंने बताया कि "छायावाद बहुआयामी काव्य है। छायावाद का साहित्य अनुकरणरहित है, परंतु साम्य है। उन्होंने इन्ही बातों पर प्रकाश डालते हुए अपनी वाणी को समाप्त किया। इस सत्र का सफल संचालन श्री भास्कर मिश्र ने किया। चर्चा के साथ ही तीसरे अकादमिक सत्र कि समाप्ती हुई।

कार्यक्रम के अगले चरण में चौथे सत्र का प्रारम्भ 2:30 बजे से हुआ। इस सत्र का विषय "छायावादी गद्य साहित्य का रचनात्मक परिप्रेक्ष" था। इस सत्र कि अध्यक्षता हिन्दी भवन, विश्वभारती से प्रो. मुक्तेश्वर नाथ तिवारी ने की। मुख्य वक्ता के रूप में हिन्दी विभाग कोलकाता विश्वविद्यालय के अध्यक्ष प्रो. राम आह्लाद चौधरी थे। वक्ता के रूप में हिंदी भवन काजी नज़रुल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर विजय भारती, संस्कृत विभाग विश्वभारती से आये प्रो. निरंजन जेना उपस्थित रहे । निरंजन जेना ने सत्र का प्रारम्भ करते हुए संस्कृत साहित्य के आचार्यों के साथ निराला के साहित्य की तुलनात्मक समीक्षा की। उन्होंने संस्कृताचार्यों के विचारों के माध्यम से साहित्य की परिभाषा और उसकी रूप रेखा को स्पष्ट किया। जेना जी ने निराला के साहित्य को संस्कृत के साहित्य से जोड़ते हुए उसकी व्यापकता पर अपनी बात रखी। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए प्रो. राम आह्लाद जी ने निराला के काव्य को समसामयिक परिस्थितियों से जोड़ा और उसकी समीक्षा की। उनका मानना था की "छायावाद के कारण ही हिन्दी साहित्य का विस्तार वृहत पैमाने पर हुआ। छायावाद के गद्य ने हिन्दी साहित्य को एक नया आयाम दिया। उन्होंने

'चातुरी चमार' रचना के माध्यम से छायावादी गद्य की व्यापकता पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इसी क्रम में प्रो. विजय भारती ने छायावादी काव्य को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से व्यक्त किया। साथ ही निराला के काव्य को मुक्तिबोध के काव्य के साथ जोड़ते हुए उसकी प्रसंगिकता पर प्रकाश डाला। उन्होंने भाषिक बिन्दु पर बात रखते हुए छायावादी काव्य में निराला के काव्य बोध पर प्रकाश डाला। विजय जी ने निराला की कविता 'सरस्वती वंदना' को रूढ़िवादिता से मुक्ति तथा 'राम की शक्ति पुजा' को जीवन संघर्ष के रूप में सबके समक्ष प्रस्तुत किया। इस सत्र के अंत में प्रो. मुक्तेश्वर नाथ तिवारी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उपरोक्त विद्वानों के विषयपर एक सारगर्भित समीक्षा करते हुए निराला पर अपना एक नवीन दृष्टिकोण रखा। इस सत्र का का सफल संचालन डॉ. अर्जुन कुमार ने किया। इसी चर्चा के साथ चौथे अकादमिक सत्र कि समाप्ती हुई।

संगोष्ठी के दूसरे दिन की अंतिम कड़ी में राजू कुमार की पुस्तक " संवेदना के क्षण" का लोकार्पण हुआ, जहां सभा में उपस्थित विद्वत्तजनों ने पुस्तक पर अपने विचार प्रस्तुत किये। तत्पच्शात्य आयोजित सांस्कृतिक संध्या में रवीन्द्र नृत्य ,बाउल, भोजपुरी लोकगीत, आदि अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति हुई। इसी के साथ दूसरे दिवस के कार्यक्रम की समाप्ती हुई।

संगोष्ठी के तीसरे दिन का आरंभ पूर्वाह्न 10 बजे से हुआ। इस दिन का प्रारम्भ कार्यक्रम के पंचम सत्र के रूप में हुआ। इस सत्र का विषय "छायावादी काव्य में संस्कृति और दर्शन" था। इस सत्र की अध्यक्षता हिन्दी शिक्षण अधिगम केंद्र म. गा. अ. हि. वि. के निदेशक कृष्ण कुमार सिंह ने की। मुख्य वक्ता के रूप में शिक्षा विभाग महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के अध्यक्ष आशीष श्रीवास्तव थे। वक्ता के रूप में सुश्री गरिमा त्रिपाठी, डॉ. अभिषेक मिश्र , शुभ्रज्योति दास , मनीभूषण कुमार थे। सत्र का प्रारम्भ गरिमा त्रिपाठी ने अपने वक्तव्य से किया। गरिमा जी ने निराल के साहित्य को व्याख्यायित करते हुए उनके कला प्रवृत्तियों का चित्रण किया। उन्होंने निराला के काव्य में सामाजिक चेतना का चित्रण करते हुए विभिन्न विद्वानों के मतों का वर्णन किया। अगले वक्ता के रूप में डॉ. अभिषेक मिश्र ने छायावाद में व्याप्त देश प्रेम का चित्रण करते हुए छायावादी कवियों की प्रासंगिकता का अवलोकन किया। उन्होंने डॉ. नगेन्द्र के कथन " छायावाद स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह है" के माध्यम से छायावादी काव्य कला तथा उनकी प्रवृत्तियों का चित्रण किया। इसी क्रम में शुभ्रज्योति दास ने निराला के काव्य साधना को दर्शनिकता के आधार पर मूल्यांकन किया। उन्होंने अष्ट चक्रों का उल्लेख करते हुए छायावादी कवियों की काव्य धर्मिता का चित्रण किया। कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए अगले वक्ता मणि भूषण कुमार ने निराला के उपन्यास प्रभावती से अपनी बात का शुभारंभ किया। उन्होंने उपन्यास में व्याप्त सामाजिक अवयवों का हवाला देते हुए लेखक की संपूर्ण रचना धर्मिता का अवलोकन किया। इस सत्र के मुख्य वक्ता आशीष श्रीवास्तव जी ने निराला के साहित्यिक पक्ष का चित्रण करते हुए निराला के जीवन दर्शन की बात कही। साथ ही निराला के कुल्लीभाट कृति का उल्लेख करते हुए नीराला की सामाजिक चेतना को पारिभाषित किया। इस सत्र का अध्यक्षीय वक्तव्य प्रोफेसर कृष्ण कुमार उपरोक्त वक्ताओं के द्वारा दिए गए वक्तव्य की व्याख्या की इसके साथ-साथ निराला की काव्य कला का चित्रण करते हुए निराला और महाकवि तुलसी के बीच अंतर्द्वंद का चित्रण किया।उन्होंने कहा कि "निराला की कविता संपूर्ण भारतीय धरा जगत पर प्रकाश डालती है और निराला की कविता गहरे दर्शन से प्रभावित विवादों का उद्घाटन करती है"। इस सत्र का सफल संचालन मिथलेश यादव ने किया।

कार्यक्रम के अगले चरण में छठे अकादमिक सत्र का प्रारंभ 12 बजे से 1:30 बजे तक हुआ। इस सत्र की अध्यक्षता हिंदी भवन विश्व भारती से आए डॉक्टर जगदीश भगत ने की। वक्ता के रूप में श्री रजनीश झा, श्री ओमप्रकाश, श्री संदीप कुमार, श्री सिद्धार्थ शंकर, श्री मिथिलेश यादव, श्री भास्कर मिश्र, डॉ सुरभि विप्लव, डॉ राजू कुमार एवं तुलसी की उपस्थिती रही। इस सत्र का प्रारंभ डॉ रजनीश झा ने निराला के काव्य पक्ष पर विस्तार से अपनी बात रखते हुए किया। उन्होंने निराला के काव्य में राष्ट्रीयता के तत्वों पर जोड़ दिया। अगले वक्ता श्री ओमप्रकाश ने निराला की साहित्यिक दर्शन पर बात रखी। उन्होंने निराला के विविध काव्य रचनाओं पर संक्षेप में अपने वक्तव्य को प्रस्तुत किया। इसी क्रम में सुश्री सुरभि विप्लव ने छायावाद के प्रारंभिक उत्थान और उसके विकास यात्रा पर अपनी बात रखी। उन्होंने निराला को केंद्र में रखकर उनके विविध आयामों पर बात की। अगले वक्ता के रूप में सुश्री तुलसीदास ने निराला के काव्य में शिल्प पक्षों पर भी बात किया। अगले वक्ता के रूप में सिद्धार्थ शंकर ने निराला के व्यक्तित्व के विविध आयामों पर अपनी बात को रखी। उन्होंने निराला के बहुमुखी व्यक्तित्व को उजागर किया। इसी क्रम में श्री संदीप जी ने छायावाद की आरंभिक पृष्ठभूमि पर जोर देते हुए निराला के काव्य में रहस्यवाद का पड़ताल किया। अगले वक्ता मिथिलेश यादव ने निराला के काव्य को आधुनिक कविता के विविध एवं मुख्य आंदोलन जैसे छायावाद, प्रगतिवाद और प्रयोगवाद के संदर्भ में चर्चा की। अगले वक्ता भास्कर मिश्र जी ने निराला की काव्य रचना "राम की शक्ति पूजा" की भाषिक योजना पर बात की। उन्होंने निराला के संदर्भ में विभिन्न पक्षों पर अपनी बात रखी। इसी क्रम में डॉ राजू कुमार जी ने छायावाद पर विविध आलोचकों की आलोचना तथा उनकी दृष्टि पर प्रकाश डाला। उन्होंने निराला के उपन्यास "अप्सरा" में प्रेम की स्वच्छंदता, यथार्थ आदि को भी दिखाया। छठे अकादमिक सत्र को संपन्न करते हुए अध्यक्षीय वक्तव्य के रूप में डॉक्टर जगदीश भगत ने उपरोक्त सभी वक्ताओं के वक्तव्य पर सारगर्भित चर्चा की तथा उन्होंने वक्ताओं के मूल बिंदुओं को निराला के संदर्भ में प्रकट किया। इस सत्र का सफल संचालन श्री अमित कुमार ने किया। इन्हीं चर्चाओं के छठे अकादमिक सत्र की समाप्ति हुई।

दिनांक 07.02.2020 को संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल, माननीय कुलपति, म.गां.अं.हि.वि.वर्धा ने की। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होंने संगोष्ठी के सफल क्रियान्वन के लिए आयोजक समिति के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। निराला के सन्दर्भ में छायावाद पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी साहित्य के इतिहास में छायावाद शब्द विविध रूप में प्रयुक्त किया गया है। उन्होंने कहा की प्रयोजनशीलता, प्रगतिशीलता के साथ ही गांधी के करूणा की दृष्टि के आधार पर छायावाद का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। वस्तुतः छायावाद करूणा से ओत प्रोत राष्ट्रीय भावना का संज्ञान है जिसका मूल स्वर आर्तनमध कर रही करूणा चेतना है। निराला सभ्यता के अधिष्ठानों को रूपायित करने के लिए आर्तनाध करता हुआ कवि है, तो विद्रोह करता हुआ भी कवि है। उन्होंने कहा कहा कि यौकिकता के आधार मानव संस्कृति और सभ्यता में अंततः सत्य, सत्यसंकल्प की विजय के मार्ग के प्रस्तोता हैं। निराला, निराला का छायावाद, निराला का काव्य मनुष्य के स्वराज सिद्ध की कविता है। जो अंततः विश्रांति एवं मुक्ति की कविता है

। निराला का छायावाद सम्पूर्ण मानव मुक्ति का प्रयास एवं उसकी प्राप्ति का उपक्रम है। निराला ज्ञान और अनुभव के आधार पर अदैत्व जीवन की अनुभूति के आधार पर इस दुःख भरे संसार अन्यों के दुःख को दूर करने की करूणा उत्पन्न करते हैं। वे स्थापित जड़ता को तोड़ते हैं, वे भारतीय काव्य परंम्परा को शब्द के संयोजन, व्यक्तित्व की प्रसस्ति और साहित्य से आगे बढ़ाते हुए व्याष्टि और समष्टि के उत्थान के लिए कार्य करने की वकालत करते हैं।

विश्वविद्यालय के हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र के निदेशक प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने अपने वक्तव्य में संगोष्ठी के सफल आयोजन हेतु सभी के प्रति आभार ज्ञापित करते हुए कहा कि जिन उद्देश्यों को लेकर संगोष्ठी आयोजित की गयी उसमें सफलता कि जिन उद्देश्यों को लेकर संगोष्ठी आयोजित की गयी उसमें सफलता प्राप्त हुयी है। उन्होंने कहा आधुनिक काल में छायावादी आंदोलन मे तमाम झंझावतों को झेलते हुए भी जन-मानस को बहुआयामी ढंग से प्रभावित किया है। जिसके केंद्र में महाकवि निराला रहे हैं और उसका योगदान अविस्मरणीय है।

हिंदी प्रचार समिति बोलपुर के सभापति प्रो. हरिश्चंद्र मिश्र ने महाप्राण निराला को कालजयी रचनाकार बताते हुए कहा कि जब कोई व्यक्ति मानवता के लिए अपने जीवन को समर्पित कर देता है तो सम्पूर्ण मानव समाज उसके समक्ष नतमस्तक होकर उसका अभिनंदन एवं अनुगमन करता है। उन्होंने कहा निराला जैसे महापुरूष का व्यकित्व और कृतित्व निरंतर आने वाली पीढ़ीयों को मार्गदर्शन प्रदान करता है।

हिंदी प्रचार समिति बोलपुर के सचिव प्रो. एम.एल. तापड़िया ने उक्त संगोष्ठी को बोलपुर में आयोजित करने हेतु मा. कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित किया। समापन सत्र के दौरान ही डा. अरिगर्दन प्रताप सिंह की पुस्तक 'डिजिटल लोकतंत्र एवं भाषाँए' का माननीय अतिथियों के द्वारा लोकार्पण किया गया। संगोष्ठी की सहसंयोजक डॉ. रेखा ओझा ने संगोष्ठी की विस्तृत आख्या प्रस्तुत किया। संगोष्ठी की

सहसंयोजक डा. रेखा ओझा ने संगोष्ठी की विस्तृत आख्या प्रस्तुत किया। संगोष्ठी संयोजक सभी आगत अतिथियों, शिक्षकों विशेषज्ञों, प्रतिभागियों, शिक्षकों, विद्यार्थीयों एवं शोद्यार्थीयों के प्रति म.गां. अं. हिं. वि. वर्धा की ओर से हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित किया। समापन सत्र का संचालन विश्व भारती, शांति निकेतन के सहायक प्रोफेसर डा. जगदीश भगत ने किया।